चंदरवरदायी

कवि परिचय

हिन्दी साहित्य के आदिकाल में जो वीरगाथा काव्य लिखा गया , उसमें सबसे अधिक प्रसिद्धि, पृथ्वीराज रासो को प्राप्त हुई। इसके रचयिता चंदरवरदायी का जन्म सन् 1168 ई0 में लाहौर में हुआ था। ये महाकवि भाट जाति के जगता गोत्र के थे। ये दिल्ली के अंतिम हिंदू सम्राट पृथ्वीराज चौहान के सखा और सभाकवि थे। कहते हैं कि चंदरवरदायी और पृथ्वीराज के जन्म तथा मृत्यु की तिथि भी एक ही थी। प्रसिद्धि है कि जब मुहम्मद गोरी सम्राट पृथ्वीराज को बंदी बनाकर गजनी ले गया, तो वहाँ पहुँच कर चंद ने उनकी अद्भुत बाण विद्या की प्रशंसा की। संकेत पाकर पृथ्वीराज ने शब्दबेधी बाण से गोरी को मार गिराया और अपनी स्वातंत्र्य की रक्षा करने के लिए एक–दूसरे के कटार मारकर दोनों ने मृत्यु का वरण किया।

चंदरवरदायी कलम के ही धनी नही थे, रण भूमि में पृथ्वीराज के साथ ही अन्य सांमतों की तरह तलवार भी चलाते थे। वे स्वयं वीररस की साकार प्रतिमा थे। उनका पृथ्वीराज रासों हिन्दी का आदिकाव्य है। इसमें सम्राट पृथ्वीराज के पराक्रम और वीरता का सजीव वर्णन है। इसमें 69 समय (सर्ग या अध्याय) है। कहा जाता है कि चंद इसे अधूरा ही छोडकर गजनी चले गए थे जिसे उनके पुत्र जल्हण ने बाद में पूरा किया।

काव्य परिचय

पृथ्वीराज रासो जिस रूप में मिलता वह प्रामाणिक नहीं है क्योंकि उसमें वर्णित पात्र, स्थान नाम, तिथि और घटनाओं में से अधिकतर की प्रामाणिकता संदिग्ध है परंतु इतना अवश्य है कि मूल रूप में यह ग्रंथ इतना विशाल नहीं था। इसमें पृथ्वीराज के अनेक युद्धों, आखेटों और विवाहों का वर्णन है। कवि ने अपने चरितनायक को सभी श्रेष्ठ गुणों से युक्त चित्रित किया है। पृथ्वीराज के व्यक्तित्व में अद्भुत सौंदर्य, शक्ति और शील का सन्निवेश है।

पृथ्वीराज रासो, वीर रस प्रधान काव्य है। इसमें ओज गुण की दीप्ति आदि से अंत तक विद्यमान है। रौद्र, भयानक, वीभत्स, आदि रसों का वर्णन युद्ध के प्रसंग में और श्रृंगार का वर्णन विविध विवाहों के प्रसंग में मिलता है। शशिव्रता, इंछिनी, संयोगिता, पद्मावती आदि के रूप सौंदर्य का मोहक वर्णन चंद ने किया है।

चंद की भाषा में संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, अरबी, फारसी, आदि कि शब्दावली का संशक्त प्रयोग हुआ है। परंपरा से चले आते हुए संस्कृत तथा प्राकृत छंदो का प्रयोग रासो में हुआ ही है, युद्ध वर्णन के लिए सबसे अधिक उपयुक्त छप्पय छंद की छटा देखते ही बनती है।

श्रेष्ठ जीवन –पद्धति ,पराक्रम एवं वीरता का जो आदर्श भारतीय जनता ने अपने चित्त में प्रतिष्ठित कर रखा है, पृथ्वीराज उसके प्रतिनिधि रूप में चित्रित हुए है। इसलिए पराजित होने पर भी वे जन–मानस के अजेय योद्धाा के रूप में विराजमान है। चंद ने उनके रूप में

भारतीय वीर–भावना का चरमोत्कर्ष दिखाया हैं, अतएव अप्रामाणिक माना जाने वाला पृथ्वीराज रासो हमारा उत्कृष्ट महाकाव्य है। इससे प्रेरणा लेकर डिंगल में अनेक रासो काव्यों की रचना की गई है।

पाठ परिचय

प्रस्तुत संकलन में पृथ्वीराज रासो के पद्मावती समय में से कतिपय छंद उद्धृत किए गए है। समुद्रशिखर दुर्गके गढपति की राजकुमारी पद्मावती अद्वितीय सुंदरी है। एक तोता उससे पृथ्वीराज के सौंदर्य और पराक्रम का वर्णन करता है जिसे सुनकर वह पृथ्वीराज के प्रति अनुराग रखने लगती है। जब राजा उसका विवाह कुमाऊँ के राजा कुमोदमणि के साथ करना चाहते है तो वह तोते को संदेशवाहक बनाकर पृथ्वीराज के पास भेजती है। वे शुक की बात सुनकर पद्मावती का वरण करने के लिए चल देते है। उधर पद्मावती शिव मंदिर में पूजा करने आती है। वहीं से पृथ्वीराज रूक्मिणी की भाँति उसका हरण करके घोडे पर बिठाकर दिल्ली की और चल देते है। राजा की सेना युद्ध करके हार जाती है। इसी बीच अवसर पाकर शहाबुददीन गोरी पृथ्वीराज पर आक्रमण करता है। घोर युद्ध होता है। अंत में गोरी को परास्त करके पकड लिया जाता है। दिल्ली आकर शुभ लग्न में पद्मावती के साथ पृथ्वीराज विवाह कर लेते है।

चार बाँस चौबीस गज, अंगुल अष्ट प्रमान! ता ऊपर सुल्तान है, मत चूके चौहान!!

अध्याय – एक (पद्मावती समय) 11वीं

पूरब दिस गढ गढनपति। समुद सिषर अति दुग्ग।
तहँ सु विजय सुर राज पति। जादू कुलह अभंग।। 1।।
धुनि निसान बहु साद। नाद सुरपंच बजत दीन।
दस हजार हय चढत। हेम नग जटित साज तिन।।
गज असंष गजपतिय। मुहर सेना तिय संषह।।
इक नायक कर धरी। पिनाक धरभर रज रष्षह।।
दस पुत्र पुत्रिय एक सम । रथ सुरङ्ग अम्मर डमर।।
भंडार लछिय अगनित पदभ। सो पदम सेन कूँवर सुधर।।2।।

कठिन शब्दार्थ – पूरब दिसि– पूर्व दिशा में। गढनपति – गढों का स्वामी, श्रेष्ठ दुर्ग या गढ। समुंद शिखर– समुद्र शिखर, दुर्ग का नाम । यति – अत्यन्त विशाल। दुग्रा–दुर्ग। तहँ– वहाँ। सु–श्रेष्ठ । सुरराजपति– इंद्र। कूलह – यादव वंश का ,यदुकूल का । अभग्ग– अभग्न, अभेध, अजेय। धुनि– ध्वनि। निसान– नगाडे।नाद–गूँज, शब्द। सुरपंच–पंचम स्वर (मृदंग, तंत्री, मूरली, ताल, वेला या झाँझ और दुंदुभि आदि वाधों के स्वर । हय चंढत– घुडसवार । टेम–सवर्ण । नग –रत्न। जटित –जडे हुए। साज– घोडों की सज्जा। तिन –उसकी। करधरी पिनाक –हाथ में धनुष धारण करके। पुत्र–पुत्रिय सम– समान गुणों से युक्त पुत्र–पुत्री। सुरंग –सुंदर। अम्मर–आकाश। डमर–फहराती थी। लछिय–लक्ष्मी। अगनित–असंख्य। पदम–संख्या विशेष(दस नील से आगे) सुघर –सुन्दर।

LESSON-1 (CHANDAR VARDAI) CLASS-11 (OPTIONAL)

प्रसंग– प्रस्तुत पद्यांश कवि चन्दवरदायी के पृथ्वीराज रासौ ,महाकाव्य के पद्मावती समय से उद्धत है। यहाँ पद्मावती के पिता राजा विजयपाल के समुद्रशिखर नामक दुर्ग , सेनाओं , वैभव, और सुन्दर पत्नी का वर्णन हुआ है।

व्याख्या– कवि कहता है कि पूर्व दिशा में दुर्गों में श्रेष्ठ समुद्रशिखर नामक अति दुर्गम एवं विशाल दुर्ग है। वहाँ इन्द्र के समान यदुवंश में श्रेष्ठ राजा विजयपाल निष्कंटक रूप से राज्य करता था। उसके नगाडों की भंयकर ध्वनि गुँजती थी।उसके राज्य में नित्य प्रति पंचम स्वर करती हुई रणभेरियां या नगाडे बजा करते थे। उसके दस हजार घुडसवार थे जिनके स्वर्ण और रत्नों से जडे हुए वस्त्र शोभा पाते थे। असंख्य हाथी और हाथियों पर सवार सैनिक जो आगे चलते थे, संख्या में तीन शंख थे। राजा स्वयं सेना का नेतृत्व करता था, जिसके हाथ में शिवजी के पिनाक के समान धनुष रहता था।ऐसा वह राजा पृथ्वीभर के राजाओं की रक्षा करने में स्वयं राजपूती आन रखता था। उसके दस पुत्र और एक पुत्री थी। वे सब रूप, गुण में एक समान थे। उसके सुन्दर रथ की पाताकाएं आकाश में फहराती थी। उसके खजाने में अगणित पद्म धन भरा पडा था। उस राजा की पद्मसेन कँवर नाम की सुन्दर रानी थी।

1. ***विशेष–*** प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने राजा विजयपाल, उसके दुर्ग, सेना और खजाने का वर्णन किया है।
2. पद्यांश की भाषा प्रांरम्भिक हिन्दी है।
3. यहाँ अतिशयोक्ति ,यमक, अनुप्रास अलंकार है।
4. वर्णन में कल्पना का अतिशय प्रयोग किया गया है।
5. वर्णन में चित्रात्मकता है।
6. कूँवर शब्द का प्रयोग कवि ने विजयपाल की रानी के लिये किया है।

मनहुँ कला ससिभान। कला सोलह सो बन्निय।।
बाल बैस ससिता समीप। अंम्रित रस पिन्नय।।
बिगसि कमल म्रिग भमर। वैन षंजन मृग लुटिट्य ।।
हीर कीर अरू बिंब । मोति नष सिष अहि घुट्टिय।।
छप्पति गयंद हरि हंस गति।विह बनाय संचै सचिय।।
पदमिनिय रूप पदमावतिय।मनहु काम कामिनि रचिय।।3।।

कठिन शब्दार्थ – कला सोलह– चन्द्रमा की सोलह कलाओं से । सो– वह। बन्निय– बनी थी। बाल बैस– बाल। वयस–बचपन। ससिता–शिशुता– शैशवावस्था। ससि–चन्द्रमा। ता –उसके । अंम्रित–अमृत। पिन्निय–पीया है, पान किया है। विंगसि कमल म्रिग– मुख विकसित कमल की श्रेणी को भी लज्जित करता है। बेनु– वंशी। मृग–हरिण। लुट्टिय– लूट लिया है, श्रीहीन कर दिया है।छप्पति–छिपाती है। हरि–सिंह । बिह बनाय– विधि ने बनाकर। संचे सचिय– साँचे में ढालकर। मनहूँ –मानौ। काम–कामिनी–कामदेव की पत्नी, रति। रचिय –रचना की है।

प्रसंग– प्रस्तुत पद्यांश कवि चन्दवरदायी के पृथ्वीराज रासौ ,महाकाव्य के पद्मावती समय से उद्धत है। यहाँ कवि ने परम्परायुक्त उपमानों द्वारा पद्मावती के अपूर्व सौन्दर्य का उत्यन्त कलापूर्ण चित्रण किया है।

व्याख्या– कवि कहता है कि राजा विजयपाल की पद्मसेन कंवर रानी से उत्पन्न पुत्री पद्मावती इतनी सुन्दर है मानो वह साक्षात् चन्द्रमा की कला हों तथा उसका निर्माण चन्द्रमा की सम्पूर्ण सोलह कलाओं से किया गया हो। अभी उसकी बाल्यावस्था है। उसके पावन और शान्तिप्रदायक रूप को

LESSON -1 (CHANDAR VARDAI) CLASS-11 (OPTIONAL)

देखकर ऐसा लगता है कि मानों चन्द्रमा ने उसी से अमृत का पान किया हो। कहने का भाव यह है कि उसके सौन्दर्य को देखकर नेत्रों को उसी प्रकार शीतलता प्राप्त होती है जिस प्रकार चन्द्रमा को देखकर नेत्र शीतल होते हे। कवि वर्णन करते हुए कहता है कि पद्मावती के मुख, नेत्र, हाथ ,चरणों के सौन्दर्य ने विकसित कमलों के सौन्दर्य को, उसके केशों के श्याम रंग ने भ्रमरों के श्यामल सौन्दर्यको, उसकी मधुर वाणी ने वंशी के मधुर स्वर को, उसके चंचल नेत्रों ने खंजन पक्षी की चंचलता के सौन्दर्य को, नेत्रों की विशालता एवं भोलेपन नेमृगों केनेत्रों के इन्हीं गुणों को छीन लिया हो। तात्पर्य यह है कि पद्मावती के शरीर के अंग प्रत्यंग इतने अधिक सुन्दर है कि उनके सामने ,उनके लिए प्रयुक्त होने वाले सारे उपमान फीके जान पडते है।

कवि कह रहा है कि पद्मावती का गौरवर्ण शरीर हीरे के समान चमकता है।उसकी नासिका को देखकर तोते की चोंच का आभास होता है,उसके अधर बिम्बाफल की तरह लाल और मोहक है। उसकी अंगुलियों के नाखून मोती के समान सुन्दर और सुडौल हैं और शिखा सर्प को लज्जित करने वाली है। उसकी गति को देखकर हाथी ,हंस, और सिंह भी लज्जित हो दूर जाकर छिप जाते है। अर्थात् उसकी चाल में हाथी, की सी मस्ती, सिंह का सा गर्व, और हंस की सी मंथरता है। उसका सम्पूर्ण शरीर इतना सुडौल और सुगठित है कि मानो विद्याता ने उसे सांचेमें ढालकर गढा हो, अथवा ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे ब्रहा ने इन्द्र की पत्नी शची का सौन्दर्य लेकर उसे बनाया हो। ऐसी उस पद्मावती का रूप पद्मिनी नारी (नारियों का एक भेद)के समान सुन्दर और मोहक है। उसके रूप को देखकर ऐसा लगता है कि मानो विद्याता ने उसके रूप में कामदेव की पत्नी रति का ही दूसरा रूप खडा कर दिया हो।

7. ***<u>विशेष–</u>*** प्रस्तुत कवि ने पद्मावती को अतिशय सुन्दर बतलाया है। सौंन्दर्य के जितने भी सुंदर उपमान होते है उनका प्रयोग किया गया है।
8. यहावर्णन नारी के नख–शिख वर्णन की परम्परा के अनुसार है।
9. यहाँ अतिशयोक्ति ,यमक, उत्प्रेक्षा , व्यतिरेक अलंकार है।
10. सुन्दर नारियों के चार प्रकार बताये जाते है– 1.पद्मिनी 2.चित्रिणी 3.शंखिनी 4. हस्तिनी।

सामुद्रिक लच्छन सकल। चौसठि कला सुजान।।
जानि चतुर दस अंग षट। रति बसंत परमान।। 4।।
सषियन सँग खेलत फिरत। महलनि बाग निवास ।।
कीर इक्क दिष्षिय नयन। तब मन भयौ हुलास।।5।।
मन अति भयो हुलास। विगसि जनु कोक किरण रवि।।
अरूण अधर तिय सुधर।बिंब फल जानि कीर छबि।।
यह चाहत चष चकित । उहजु तक्किय झरप्पि झर।।
चंच चहुट्टिय लोभ। लियौ तब गहित अप्प कर।।
हरषत अनंदमन महि हुलस ।लै जुमहल भीतर गइय।।
पंजर अनूप नग मनि जटित। सो तिहि मँह रष्षत भइय।।6।।

<u>कठिन शब्दार्थः–</u> सामुद्रिक लच्छन– हाथ, पैर तथा मुख की आकृति देख शुभ–अशुभ लक्षणों का वर्णन। सकल–सारे, सभी। चौंसठि कला– संगीत, नृत्य, चतुराई, चित्रकला आदि चौंसठ प्रकार की कलाऐं। चतुर दस– चौदह, चौदह प्रकार की विधाऐं। अंग षट– छह अंग, वेद के छ अंग–शिक्षा, छंद, व्याकरण, निरूक्त, ज्योतिष और कल्प, अथवा छह शास्त्र। रति–प्रेम, विलास। परमान– प्रमाण, समान। कीर–तोता। इक्क–एक। दिष्षिय– दिखाई दिया। हुलास– प्रसन्नता। विगसि– खिला, विकसित हुआ। जनु–मानो । कोक–कमल। तिय–नारी। सुघर– सुंदर। बिंब फल–लाल रंग का एक फल जो सुंदर होंठों का उपमान माना गया है। चष–नेत्र। चकित– आश्यर्चयुक्त। उहजु–ओर वह। तक्किय– तक रहा। झरप्पि झर– झट से झपटना। चंच–चोंच। चहुट्टिय– पकडा। गहित– ग्रहण

LESSON-1 (CHANDAR VARDAI) CLASS 11 (OPTIONAL)

किया , पकड लिया। अप्प– अपने। कर– हाथ से। पंजर– पिंजरा। अनूप– अनोखा, अद्वितीय। नग मनि– रत्न और मणियाँ। जटित– जडा हुआ। सो तिहि मँह– उसमें। रष्षत भइय– रख दिया।

प्रसंग:– इसमें कवि ने पद्मावती के शुभ लक्षणों से युक्त शरीर और उसके तोते से मिलने के प्रसंग का वर्णन किया है।

व्याख्या:– कवि कहता है कि राजकुमारी पद्मावती सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार निश्चित सभी शुभ लक्षणों से युक्त थी। वह चौंसठ कलाओं में प्रवीण थी और उसे चौदह विद्याओं और वेद के छह अंगो का भी ज्ञान था। वह रति और बसंत के सम्मिलित सौंदर्य का साक्षात् प्रमाण थी। वह अपनी सखियों के साथ, राजभवनों ,उपवनों और निवासों में खेलती–फिरती थी। एक दिन उसे एक तोता दिखाई दिया। उसे देखकर पद्मावती का मन बडा प्रसन्न हुआ। उसके प्रसन्न मुख को देख ऐसा लगा मानो सूर्य की किरणों के दर्शन से कोई लाल कमल खिल गया हो। उस सुन्दर नारी पद्मावती के लाल होटों को वह तो बिंबा के लाल फल समझ बैठां इधर तो पद्मावती उस तोते को आश्चर्य से देख रही थी और उधर वह तोता बडे ध्यान से उसके होंठो पर झपट पडने की ताक में था। अंत में तोते के बिंबाफल (होंठ) के मधुर रस के लोभ से , पद्मावती के होठों को चोंच में पकडा तो तुरन्त पद्मावती ने तोते को अपने हाथों से पकड लिया। तोते को पाकर पद्मावती बडी हर्षित हो रही थी और उसका मन प्रसन्नता से भर उठा था। वह तोते को अपने महल में ले गई वहां उसने उस तोते को , रत्नों और मणियों से जडे सोने के एक अनोखे पिंजरे में बिठा दिया।

विशेष:–1. कवि ने इस कांव्याश में अपने ज्योतिष शास्त्र , कलाओं, विद्या और वेंदांग सम्बन्धी ज्ञान का परिचय कराया है।

2.भाषा डिंगल, मिश्रित शब्दावली युक्त है। अनुप्रास एवं उत्प्रेक्षा अलंकार है।

सवालष्य उत्तर संयल। कमऊँ गड्ड दूरंग ।।
राजत राज कुमोदमनि। हय गय द्रिब्ब अभंग ।। 7।।
नारिकेल फल परिठ दुज।चौक पूरि मनि मुत्ति।।
दई जू कन्यसा बचन बर । अति अनंद करि जूत्ति।।8।।
पदमावति विलषि बर बाल बेली। कही कीर सों बात तब हो अकेली।।
झटं जाहु तुम्ह कीर दिल्ली सुदेस। बरं चाहुवानं जु आनौ नरेसं।।9।।
आँनौ तुम्ह चाहुवांन बर । अरू कहि इहै संदेस ।।
सांस सरीरहि जो रहै। प्रिय प्रथिराज नरेस।। 10।।

कठिन शब्दार्थ :– सवालष्य–सवालाख (सपादलक्ष) धनधान्य से पूर्ण प्रदेश, जिससे कर के रूप में सवालाख की आय होती हो। सयल–शैल, पर्वत। कमँऊ–कुमायूँ। दूरंग– दुर्गम। राजत–विराजता है, शोभा पाता है। राज–राजा। कुमोदमनि–कुमोदमणि (नाम का राजा), । हय–घोडे। गय–हाथी। द्रिब्ब– द्रव्य, सम्पत्ति। अभंग– अपार। नारिकेल– नारियल। दूज–द्विज, ब्राह्मण। चौक–शुभकार्यों में बनाई जाने वाली चौकोर आकृति। पूरि–बनाकर। मनि– मणि। मुत्ति– मोती। दई न कन्या बचन बर– कन्या के विवाह का वचन दे दिया था, विवाह कर दिया। जुत्ति– गाँठजोड। विलषि– रोकर। झटं– शीघ्र। चाहुवानं– चौहान (पृथ्वीराज चौहान)। आँनौ–लाओ। नरेस–राजा।

प्रसंग एवं संदर्भ:– यहाँ कवि ने पद्मावती के पिता द्वारा पद्मावती का विवाह कुमायूँ के राजा कुमोदमणि के साथ किए जाने और पद्मावती द्वारा तोते को संदेश देकर पृथ्वीराज चौहान के पास भेजे जाने का वर्णन किया है।

व्याख्या:– कवि कहता है कि उत्तर दिशा में पर्वतीय क्षेत्र में, धन धान्य से परिपूर्ण सवालाख का राजस्व देने वाला कुमायूँ नामक दुर्गम प्रदेश था। उस पर कुमोद मणि नामक राजा राज करता है।उसके पास असंख्य हाथी, घोडे और अपार सम्पदा है। पद्मावती के पिता ने ब्राह्मणों को नारियल से सम्मानित करके, मणि–मोतियो का चौक पुरवाकर अपनी कन्या का गठबन्धन (विवाह) राजा कुमोदमणि से कर दिया या करने का वचन दे दिया। सुन्दर राजकुमारी पद्मावती ने रोते हुए, तोते

के पास जाकर अकेले में उससे कहा कि वह तुरंत दिल्ली जाये और श्रेष्ठ वर राजा पृथ्वीराज चौहान को लेकर आए। पद्मावती ने तोते से पृथ्वीराज को शीघ्र लेकर आने और उसे वह संदेश देने को कहा '' हे प्रिय पृथ्वीराज नरेश! मेरे शरीर में प्राण रहते आप मुझे लेने को आ जाओ।''

लै पत्री सुक यों चल्यौ। उड्यौ गगनि गहि बाव।।
जहँ दिल्ली प्रथिराज नर । अट्ठ जाम में जाव ।। 11।।
दिय कग्गर नृप राज कर। षुलि बंचिय प्रथिराज।।
सुक देखत मन में हँसे। कियौ चलन कौ साज।। 12।।
कर पकरि पीठ हय परि चढाय। लै चल्यौ नृपति दिल्ली सुराय।।
भइ षबरि नगर बाहिर सुनाय। पदमावतीय हरि लीय जाय ।। 13।।
कम्मान बांन छुट्टहि अपार। लागंत लोह इम सारि धार।।
घमसान घाँन सब बीर षेत। घन श्रोन बहत अरू रकत रेत।। 14।।

कठिन शब्दार्थः– पत्री–पत्र,संदेश। गगनि–आकाश। गहि–पकडकर, साथ में। बाव– वायु। अट्ठ जाम– आठ प्रहर, लगभग चौबीस घण्टे। दिय–दिया। कग्गर– कागज, पत्र। नृपराज– राजाओं का राजा, श्रेष्ठ राजा।षुलि–(खुलि) खोलकर।बंचिय–बाँची, पढी। चलन कौ– चलने का। साज–तैयारी। सुराय– श्रेष्ठ राजा। षबरि– खबर। हरी लीय जाय– हरण करके लिए जा रहा है। कम्मान –धनुष। लागंत– लगती है। लोह– लोहू, रक्त। इम –जैसी, मान। सारि– छोटी नदी या नहर। धार–धारा। षेत–(खेत) रणभूमि। घन–घना, बहुत। श्रोन–रक्त। रकत–लाल।

प्रसंग तथा संदर्भ :– कवि इस अंश मे तोते के पत्र लेकर पृथ्वीराज के पास पहुँचने और पृथ्वीराज द्वारा पद्मावती के हरण का वर्णन कर रहा है।

व्याख्याः– पद्मावती का संदेश पत्र लेकर तोता ऐसे चला जैसे वह वायु को पकडकर या वायु के साथ उडा जा रहा हो। उसे पृथ्वीराज की राजधानी दिल्ली में आठ प्रहर में पहुंचना था। दिल्ली पहुँचकर तोते ने पद्मावती का पत्र पृथ्वीराज के हाथ में दिया। पृथ्वीराज ने पत्र को खोलकर पढा। वह तोते की ओर देखकर मन ही मन हँसे और समुद्र शिखर चलने की तैयारी करने लगे। समुद्र शिखर पहुंचकर (शिव पूजन को निकली) पद्मावती का हाथ पकडकर उसे अपने घोडे पर बिठा लिया और राजा पृथ्वीराज उसे दिल्ली ले चले। इस घटना की खबर नगर में पहुँची कि पृथ्वीराज पद्मावती का हरण करके ले जा रहा है।

उसी समय पृथ्वीराज की सेना और पद्मावती क पिता की सेना के बीच युद्व छिड गया। धनुषों से असंख्य बाण छूटने लगे। सैनिकों के रक्त से समीप बह रही छोटी सी नदी की धार लहू की धर जैसी लगने लगी । घमासान युद्ध में अनेक वीर मारे गए, चारों ओर रक्त बहने लगा और उससे रणभूमि की रेत लाल हो गई।

विशेषः– 1. युद्व का जीवंत वर्णन हआ है। छंद वीर रस के अनुकूल है।

2. गगन गहि *रकत रेत* में अनुप्रास अलंकार है तथा *लागंत लोह इम सारि धार* मे उपमा अलंकार है।

पदमावति इम लै चल्यौ। हरषि राज प्रिथिराज।।
एतें परि पतिसाह की । भई जु आनि अवाज।।15।।
भई जु आँनि अवाज। आय साहाबदीन सुर।।
आज गहौं प्रथिराज। बोल बुल्लंत गजत धुर।।
क्रोध जोध जोधा अनंद। करिय पती अनि गज्जिय।।
बांन नालि हथनालि। तुपक तीरह स्रव सज्जिय।।
पव्वैं पहार मनों सार के। भिरि भुजांन गजनेस बल।।
आये हकरि हकार करि। षुरासान सुलतान दल।। 16।।

कठिन शब्दार्थ –एतें परि– इसी बीच। पतिसाह– शाहबुद्दीन गौरी। गहौं– पकडूँगा, बंदी बनाऊँगा। बोल–बोली, बात। बुल्लंत– बोलता। गजत–गरजता। जोध–युद्ध। करिय– पंक्ति में खडी थी। अनि–सेना। बांन नालि– नावक, नली में रख चलाये जाने वाले बाण। हथनालि– बन्दुक। तुपक– तोप। तीरह–बाण। सार के – लोहे के। भुजांन–भुजाओं में। गजनेस –बडा हाथी। हरकि हकार– हुंकार भरते हुए। पुरासान– एक देश। दल–सेना या सैनिक।

प्रसंग व संदर्भः– इस अंश में पद्मावती का हरण करके उसे दिल्ली ले जा रहे पृथ्वीराज पर शहाबुद्दीन गौरी द्वारा आक्रमण और युद्ध का वर्णन है।

व्याख्याः– राजा पृथ्वीराज बडे प्रसन्न मन से, पद्मावती को लेकर दिल्ली की ओर चला। इसी बीच शहाबुद्दीन गौरी ने आकर आवाज लगाई। वह बडे घमण्ड भरे स्वर में बोला कि वह पृथ्वीराज को बंदी बनाएगा। उसके योद्धा क्रोध और युद्ध के आनंद में भरे हुए थे। उसने आकर सेना को पंक्तियों में खडा किया। उसके सैनिक बान नालि, हथनालि, तोप और बाणों से सुसज्जित थे। वे योद्धा ऐसे लग रहे थे मानो वे लोहे के पर्वत हों। उनकी भुजाओं मे गजराज जैसा बल था। षुरासान के सुलतान गौरी के वे योद्धा हुंकार भरते हुए पृथ्वीराज के सामने आ पहुँचे।

विशेषः– 1. गौरी की सेना का शब्द–चित्र बडा सजीव ओजवर्धक है।
2. भाषा मे मिश्रित शब्दावली के साथ ही कवि ने कुछ नए शब्द भी गढे है। जैसे –गजनेस।

तिन घेरिय राज प्रथिराज राजं। चिहौं और घन घोर निसाँन बाजं।।
गही तेग चहुंवान हिंदवांन रानं। गजं जूथ परि कोप केहरि समानं।।17।।
गिरद्दं उडी भाँन अंधार रैनं। गई सूधि सुज्झै नहीं मज्झि नैनं।।
सिरं नाय कम्मान प्रथिराज राजं। पकरियै साहि जिम कुलिंगबाजं।।18।।
जीति भई प्रथिराज की । पकरि साह लै संग।।
दिल्ली दिँसी मारगि लगौ। उतरि घाट गिर गंग।। 19।।

कठिन शब्दार्थ :– तिन–उन, गौरी के सैनिको ने। घेरिय– घेर लिया। चिहौ– चारों । घनघोर– बादलों के गर्जन(के समान)निसाँन– युद्ध बाजे, धोंसा या नगाडा। तेग–तलवार। चहुँवान–चौहान। हिंदवान– हिन्दुओ (के) रानं–राजा। गिरंद्द–गर्द, धूल। कोप–क्रोध। केहरि– सिंह। भाँन– सूर्य सा हो गयां । अंधार– –अंधेरा। रैनं– रात। सूधि– सूध। सुज्झै– सूझकां । मज्झि–मध्य में। नाय– डालकर या झुकाकर। कम्मान– धनुष। कुलिंग– पक्षी। बाजं–बाज पक्षी जो अन्य पक्षियों का शिकार करता है। दिंसी–दिशा, ओर। मारगि– मार्ग। लगौ– लग लिया। (मार्ग पर चल दिया)। गिर–पर्वत।

LESSON-1 (CHANDAR VARDAI) CLASS-11 (OPTIONAL)

व्याख्याः– उस गौरी की सेना ने राजा पृथ्वीराज को घेर लिया। चारों ओर नगाडों या युद्व के बाजों का घनघोर शब्द होने लगा। तब हिन्दुओं के प्रिय सम्राट पृथ्वीराज ने अपनी तलवार हाथ मे उठाई। ऐसा लगा मानों सिंह ने क्रुद होकर हाथियों के झुण्ड पर आक्रमण कर दिया हों। चारों ओर धूल उडने लगी और अँधेरा होने से रात– सी लगने लगी। धूल और अंधकार के मारे सैनिकों की सुध–बुध चली गई। आँखों से कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। तब राजा पृथ्वीराज ने गौरी के गले में अपने धनुष को फसाँकर, उसे ऐसे पकड लिया जैसे बाज अपने शिकार पक्षी को पकड लिया करता है।

इस प्रकार युद्व में पृथ्वीराज की विजय हुई और वह साह (गौरी) को बंदी बनाकर और अपने साथ लेकर, घाट पर्वत और गंगा आदि नदियों को पार करता हुआ, दिल्ली के मार्ग पर चल दियां ।

विशेष– 1... वीर रस का संचार करने वाली भाषा शैली का प्रयोग है।

बोलि विप्र सोधे लगन्न। सुभ घरी परट्ठिय ।।
हर बांसह मंडप बनाय। करि भांवरि गंठिय।।
ब्रह्य वेद उच्चरहिं। होम चौरी जुप्रति वर।।
पद्मावती दुलहिन अनूप। दुल्लह प्रथिराज राज नर।।
ड्डयौ साह साहाबदी। अट्ठ सहस हे वर सुघर।।
दै दाँन माँन षट भेष कौं। चढे राज द्रूग्गा हुजर।। 20 ।।

कठिन शब्दार्थ :– विप्र–ब्राह्ाण। सोधे–शोभित की। लगन्न– लग्न। घरी–घडी, समय। परिटिठ्य–निश्चित की गई। हर–हरे। बांसह–बांसों से। भांवरि गंठिय– भाँवर डाली गई। ब्रहा–ब्राह्ाण। उच्चसिंह– उच्चारण कर रहे थे। होम चौरी– हवन की वेदी। दुल्लह– दुलह, वर। डंडयौ– दण्डित कियां। अट्ठ– आठ। सहस– हजार। षट भेष– अध्ययन, अध्यापन, यज्ञ करना, यज्ञ कराना, दान देना, दान लेना ये छह कर्म करने वाले ,ब्राह्ाण। द्रुग्गा– दुर्ग।

प्रसंग व संदर्भः– इस पद्याशं में चन्दर वरदायी ने पद्मावती व पृथ्वीराज के विवाह का वर्णन किया है।

व्याख्याः– कवि कहता है कि राजा पृथ्वीराज ने ब्राह्ामणों को बुलाकर उनसे पद्मावती के साथ अपने विवाह की लग्न और शुभ घडी निश्चित कराई। हरे बाँसों का मंडप बनवाकर उसमें राजा पृथ्वीराज की पद्मावती के संग भावर डलवाई गई। उस समय ब्राह्ामण वेद मंत्रों का उच्चारण कर रहे थे। और होम की वेदी पर हवन हो रहा था। उस समय दुलहिन के रूप में पद्मावती और दुलहे के रूप में पृथ्वीराज की जोडी, अद्वितीय सुंदर लग रही थी।

पृथ्वीराज ने शहाबुद्दीन गोरी को दण्डित किया। इसके पश्चात् पृथ्वीराज ने ब्राह्ामणों को दान देकर सम्मानित किया और फिर दुलहिन पद्मावती के साथ दुर्ग या राजभवन में प्रवेश किया।

इसे हिन्दी का प्रथम महा कवि माना जाता है। इनका पृथ्वीराजरासो हिंदी का प्रथम महाकाव्य है। चंद दिल्ली के अंतिम हिंदू सम्राट महाराज पृथ्वीराज के सामंत और राजकवि के रुप में जाने जाते हैं। इससे इनके नाम में भावुक हिन्दुओं के लिए एक विशेष प्रकार का आकर्षण बढ़ता है।

जन्म

रासो के अनुसार ये भ जाति के जगात नामक गोत्र के थे। इनके पूर्वज की भूमि पंजाब थी। इनका जन्म लाहोर में हुआ था। इनका और महाराज पृथ्वीराज का जन्म एक ही दिन हुआ था। ये महाराज पृथ्वीराज के राजकवि के साथ-साथ उनके सखा ओर सामंत भी थे। वे षड्भाषा, व्याकरण, काव्य, साहित्य, छंद:शास्त्र, ज्योतिष, पुराण, नाटक आदि अनेक विद्याओं में पारंगत थे।

इन्हें जालंधरी देवी का इष्ट था जिनकी कृपा से ये अदृष्ट-काव्य भी कर सकते थे। इनका जीवन पृथ्वीराज के जीवन के साथ ऐसा मिला हुआ था कि अलग नहीं किया जा सकता। युद्ध में, आखेट में, सभा में, यात्रा में, सदा महाराज के साथ रहते थे, और जहाँ जो बातें होती थीं, सब में सम्मिलित रहते थे।

चन्द और पृथ्वीराजरासो

पृथ्वीराजरासो ढाई हजार पृष्ठों का बहुत बड़ा ग्रंथ है जिसमें ६९ समय (सर्ग या अध्याय) हैं। प्राचीन समय में प्रचलित प्रायः सभी छंदों का इसमें व्यवहार हुआ है। मुख्य छन्द हैं - कवित्त (छप्पय), दूहा, तोमर, त्रोटक, गाहा और आर्या। जैसे कादंबरी के संबंध में प्रसिद्ध है कि उसका पिछला भाग बाण के पुत्र ने पूरा किया है, वैसे ही रासो के पिछले भाग का भी चंद के पुत्र जल्हण द्वारा पूर्ण किया गया है।

रासो के अनुसार जब शहाबुद्दीन गोरी पृथ्वीराज को कैद करके गजनी ले गया, तब कुछ दिनों पीछे चंद भी वहीं गए। जाते समय कवि ने अपने पुत्र जल्हण के हाथ में रासो की पुस्तक देकर उसे पूर्ण करने का संकेत किया। जल्हण के हाथ में रासो को सौंपे जाने और उसके पूरे किए जाने का उल्लेख रासो में है -

पुस्तक जल्हण हत्थ दै चलि गज्जन नृपकाज ।
रघुनाथनचरित हनुमंतकृत भूप भोज उद्धरिय जिमि ।
पृथिराजसुजस कवि चंद कृत चंदनंद उद्धरिय तिमि ।।

रासो में दिए हुए संवतों का ऐतिहासिक तथ्यों के साथ बिल्कुल मेल न खाने के कारण अनेक विद्वानों ने पृथ्वीराजरासा के समसामयिक किसी कवि की रचना होने में पूरा संदेह किया है और उसे १६वीं शताब्दी में लिखा हुआ एक जाली ग्रंथ ठहराया है। रासो में चंगेज, तैमूर आदि कुछ पीछे के नाम आने से यह संदेह और भी पुष्ट हाता है। प्रसिद्ध इतिहासज्ञ रायबहादुर पंडित गौरीशंकर हीराचंद ओझा रासो में वर्णित घटनाओं तथा संवतों का बिल्कुल भाटों की कल्पना मानते हैं। पृथ्वीराज की राजसभा के काश्मीरी कवि जयानक ने संस्कृत में "पृथ्वीराजविजय' नामक एक काव्य लिखा है जो पूरा नहीं मिला है। उसमें दिए हुए संवत् तथा घटनाएं ऐतिहासिक खोज के अनुसार ठीक ठहरती है। उसमें

LESSON-1 (CHANDAR VARDAI) CLASS-11 (OPTIONAL)

पृथ्वीराज की माता का नाम कर्पूरदेवी लिखा है जिसका समर्थन हाँसी के शिलालेख से भी होता है। उक्त ग्रंथ अत्यंत प्रामाणिक और समसामयिक रचना है। उसके तथा "हम्मीर महाकाव्य' आदि कई प्रामाणिक ग्रंथों के अनुसार सोमेश्वर का दिल्ली के तोमर राजा अनंगपाल की पुत्री से विवाह होना और पृथ्वीराज का अपने नाना की गोद जाना, राणा समरसिंह का पृथ्वीराज का समकालीन होना और उसके पक्ष में लड़ना, संयोगिताहरण इत्यादि बातें असंगत सिद्ध होती हैं। इसी प्रकार आबू के यज्ञ से चौहान आदि चार अग्निकुलों की उत्पत्ति की कथा भी शिलालेखों की जाँच करने पर कल्पित ठहरती है, क्योंकि इनमें से सोलंकी, चौहान आदि कई कुलों के प्राचीन राजाओं के शिलालेख मिले हैं जिनमें वे सूर्यवंशी, चंद्रवंशी आदि कहे गए हैं, अग्निकुल का कहीं कोई उल्लेख नहीं है।

पंडित मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या ने रासो के पक्ष समर्थन में इस बात की ओर ध्यान दिलाया कि रासो के सब संवतों में, यथार्थ संवतों से ९०-९१ वर्ष का अन्तर एक नियम से पड़ता है। उन्होंने यह विचार उपस्थित किया कि यह अंतर भूल नहीं है, बल्कि किसी कारण से रखा गया है। इसी धारणा को लिए हुए उन्होंने रासो के इस दोहे को पकड़ा -

एकादस सै पंचदह विक्रम साक अनंद ।
तिहि रिपुजय पुरहरन को भग पृथिराज नकिंरद ।।

फिर यह भी विचारणीय है कि जिस किसी ने प्रचलित विक्रम संवत् में से ९०-९१ वर्ष निकालकर पृथ्वीराजरासो में संवत् दिए हैं, उसने क्या ऐसा जान बूझकर किया है अथवा धोखे या भ्रम में पड़कर। ऊपर जो दोहा उद्धृत किया गया है, उसमें अनंद के स्थान पर कुछ लोग अनिंद पाठ का होना अधिक उपयुक्त मानते हैं। इसी रासो में एक दोहा यह भी मिलता है -

एकादस सैपंचदह विक्रम जिम धमसुत्त ।
त्रतिय साक प्रथिराज कौ लिष्यौ विप्र गुन गुत्त ।।

जीवन परिचय

हिंदी के महान कवि चन्दबरदाई का जन्म संवत् १२२५ में हुआ था। उनका जन्म स्थान लाहौर बताया जाता है। चन्द पृथ्वीराज के पिता सोमेश्वर के समय में राजपूताने आए थे। सोमेश्वर ने आपको अपना दरबारी कवि बनाया। यहीं से आपकी दरबारी जिंदगी शुरु होती है। पृथ्वीराज के समय में आप नागौर में बस गए। यहाँ आज भी आपके वंशज रहते हैं।

LESSON-1 (CHANDAR VARDAI) CLASS-11 (ORIGINAL)

चन्दबरदाइ के वंशज का वंशवृक्ष

चन्दबरदाई की औलाद

चंद के वंश के सितारे नानूराम के अनुसार चंद के चार लड़के थे। चार में से एक लड़का मुसलमान हो गया। तीसरा लड़का अमोर में बस गया और उसका वंश वहीं चलता रहा। चौथे लड़के का वंश नागौर में चला। चंद ने पृथ्वीराजरासो में अपने लड़कों का उल्लेख इस प्रकार किया है:-

दहति पुत्र कविचंद कै सुंदर रुप सुजान।
इक्क जल्ह गुन बावरो गुन समुदं ससभान।।

साहित्य लहरी की टीका में एक पद इस तरह बयान करता है --

प्रथम ही प्रथु यज्ञ ते ये प्रगट अद्भुत रुप।
ब्रहमराव विचारी ब्रहमा राखु नाम अनूप।।
पान पय देवी दियो सिव आदि सुर सुख पाय।
कहमो दुर्गा पुत्र तेरो भयो अति अधिकाय।।
पारि पाँयन सुख के सुर सहित अस्तुति कीन।
तासु बंस प्रसंस मैं भौ चंद चारु नवीन।।
भूप पृथ्वीराज दीन्हीं तिन्हें ज्वाला दंस।
तनय ताके चार कीनो प्रथम आप नरेस।।
दूसरे गुनचंद ता सुत सीलचंद सरुप।
वीरचंद प्रताप पूरन भयो अद्भुत रुप।।
रणथंभौर हमीर भूपति लँगत खेसत जाये।
तासू बंस अनूप भौ हरिचंद अति विख्यात।।
आगों रहि गोपचल मैं रहयो तर सुत वीर।
पुत्र जन्मे सात तोके महा भट गंभीर।।
कृष्णाचंद्र उदारचंद जु रुपचंद सुभाई।
बुद्धिचंद प्रकास चौथे चंद में सुखदाई।।
देवचंद प्रबोध संसृतचंद ताको नाम।
भयो सप्तो नाम सूरजचंद मंद निकाम।।

LESSON-1 (CHANDAR VARDAI) CLASS-11 (OPTIONAL)

उपर्युक्त पद और नानूराम के द्वारा बताये गए एक नाम के अलावा सभी नाम मिलते- जुलते दिखाई देते हैं।

चन्दबरदाइ दरबार में

चन्द दिल्ली के अंतिम हिंदू सम्राट पृथ्वीराज के दरबार में एक सामंत तथा राजकवि के रुप में प्रसिद्ध हैं। इनका जन्म और सम्राट पृथ्वीराज का जन्म एक ही दिन हुआ माना जाता है। दोनों की इस संसार से विदाई भी एक ही दिन हुई थी। दुनिया में आने से मरने तक दोनों एक साथ रहे। ये दोनों कहीं भी एक साथ दिखाई दे सकते थे। महाराज चाहे घर में हों, युद्ध में या यात्रा में चन्दजी साथ में अवश्य होते थे और प्रत्येक बात मशविरे में शामिल रहा करते थे। इसी अथाह प्रेम में चन्दबरदाई ने हिंदी भाषा का प्रथम महाकाव्य पृथ्वीराज रासो की रचना कर डाली। इसमें चंद ने पृथ्वीराज की जिंदगी की अनेक घटनाओं उका उल्लेख किया है। इसमें पायी जाने वाली बहुत- सी घटनाओं से पृथ्वीराज की चरित्र को प्रस्तुत में सार्मथ्य मानी जाती हैं।

यह महाकाव्य ढ़ाई हजार पृष्ठों का विशाल ग्रंथ है। इसमें कुल मिलाकर उनहत्तर अध्याय की रचना की गई है। बाण की कादंबरी की तरह पृथ्वीराजरासो के बारे में भी यह कहा जाता है कि पिछले भाग को चंद के पुत्र जल्हण ने पूर्ण किया। चंद ने अपने पुत्र जल्हण को यह महान काव्य देते हुए कहा था :-

पुस्तक जल्हण हत्थ है चलि गज्जन नृपकाज।
रघुनाथ चरित हनुमंतकृत भूप भोज उद्धरिय जिमि।
पृथ्वीराज सुजस कवि चंद कृत चंदनंद उद्धरिय तिमि।।

नानूराम के अनुसार उसके पास पृथ्वीराज रासो की एक असल प्रति अब भी मौजूद है। इस असली पृथ्वीराजरासो का एक नमूना जो पद्मावती के समय का है, उल्लेख किया जा रहा है:-

हिंदूवान थान उत्तम सुदेस।
तहँ उदित द्रूग्गा दिल्ली सुदेस।
संभरिनरेस चहुआन थान।
पृथ्वीराज तहाँ राजत भान।।
संभरिनरेस सोमेस पूत।
देक्त रुप अवतार धूत।।
जिहि पकरि साह साहाब लीन।
तिहुँ बेर करिया पानीप हीन।।
सिंगिनि- सुसद्द गुनि चढि जंजीर।

चुक्कइ न सबद बधंत तीर।।
मनहु कला ससमान कला सोलह सो बिन्नय।
बाल वेस, ससिता समीप अम्रित रस पिन्निय।।
विगसि कमलास्त्रिग, भमर, बेनु खंजन मग लुट्टिय।
हरी, कीय, अरु, बिंब मोति नखसिख अहिघुट्टिय।।

कुट्टिल केस सुदेस पोह परिचियत पिक्क सह।
कमलगंध बयसंघ, हंसगति चलाति मंद मंद।।
सेत वस्त्र सोहे सरीर नख स्वाति बूँद जस।
भमर भवहिं भुल्लहिं सुभाव मकरंद बास रस।।

पृथ्वीराज की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहा:-

प्रिय प्रथिराज नरेस जोग लिखि कग्गार दिन्नो।
लगन बराग रचि सरब दिन्न द्वादस ससि लिन्नो।।
से ग्यारह अरु तीस साष संवत परमानह।
जो पित्रीकुल सुद्ध बरन, बरि रक्खहु प्रानह।।
दिक्खंत दिट्ठि उच्चरिय वर इक पलक्क् विलँब न करिय।
अलगार रयनि दिन पंच महि ज्यों रुकमिनि कन्हर बरिय।।

पृथ्वीराजरासो की भाषा

इस महाकाव्य की भाषा कई स्थानों पर आधुनिक सांचे में ढली दिखाई देती है। कुछ स्थानों पर प्राचीन साहित्यिक रुप में भी दिखाई देती हैं। इसमें प्राकृत और अपभ्रंश शब्दों के साथ- साथ शब्दों के रुप और विभक्तियों के निशानात पुराने तरीके से पाये जाते हैं।

बज्जिय घोर निसान राज चौहान चहों दिस।
सकल सूर सामंत समरि बल जंत्र मंत्र तिस।।
उद्वि राज प्रिथिराज बाग मानो लग्ग बीर नट।
कढ़त तेग मनवेग लगंत मनो बीजु झ छट।।

थकि रहे सुर कौतिज गगन।
रंगन मगन भाई सोन घर।।
हदि हरषि बीर जग्गे हुलसी।
दुरंउ रंग नवरत बर।।

LESSON-11(CHANDAR VARDAI) CLASS-11 (OPTIONAL)

खुरासान मुलतान खघार मीर।
बलख स्थो बलं तेग अच्चूक तीर।।
रुहंगी फिरगो हल्बबी सुमानी।
ठटी ठ भल्लोच ढालं निसानी।।
मजारी- चषी मुक्ख जंबु क्कलारी।
हजारी- हजारी हुकें जोध भारी।।

LESSON -1 (CHANDAR VARDAI) CLASS-11 (OPTIONAL)